डॉ. गजानन शंकर सुर्वे
एम.ए.पी.एच.डी.
हिन्दी विभागाध्यक्ष,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा – 415 002 (महाराष्ट्र)

स्नातकोत्तर अध्यापक, हिन्दी
शोध निर्देशक, हिन्दी
सदस्य, हिन्दी अभ्यास मंडल,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रमाणपत्र

मैं, डॉ. गजानन शंकर सुर्वे, हिन्दी विभागाध्यक्ष, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा, यह प्रमाणित करता हूँ कि श्रीमती पुष्पा ओमप्रकाश सारडा ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम. फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध **"प्रयोगशील नाटककार : सुरेंद्र वर्मा"** मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। श्रीमती पुष्पा ओमप्रकाश सारडा के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से सन्तुष्ट हूँ।

सातारा

दिनांक : २१ मई 1990

(डॉ. गजानन शंकर सुर्वे)
हस्ताक्षर

प्रख्यापन

प्रयोगशील नाटककार : सुरेंद्र वर्मा

यह लघु शोध प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम. फिल (हिन्दी) के लघु प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है।

सातारा

दिनांक : 29 मई 1990

Research

(पुष्पा ओमप्रकाश सारडा)

हस्ताक्षर

प्राक्कथन

मानव प्रकृतिका सहज गुण है अन्वेषण। इस गुण के साथ ही मानव स्वभाव की अभिरूचि और उसका सौंदर्यबोध दोनों का गहरा संबंध है। अभिरूचि में विकास होना, उसका बदलना और नये के प्रति जागरूक होना मानव की अभिजात प्रवृत्ति है। प्रयोग नये विषय को अभिव्यक्त करने का प्रभावी माध्यम है। प्रयोग द्वारा नये तरीके से अध्ययन का प्रयास किया जा सकता है। आजकल साहित्य की सभी विधाओं में प्रयोगशीलता बढ़ती जा रही है। साहित्य-विधाओं में नाटक अधिक प्रभावी विधा है क्योंकि उसका प्रत्यक्ष संबंध रंगमंच से है। हम नाटक पढ़ भी सकते है और मंच पर देख सकते हैं और दोनों ओर से आनंद लूट सकते है। सुरेंद्र वर्मा के प्रकाशित नाटक पढ़ने पर हमें मालूम पड़ा कि वे हिंदी के आधुनिक नाटककारों में सर्वाधिक जागरूक प्रयोगशील नाटककार हैं। उन्होंने वस्तु, शिल्प और मंच की दृष्टि से अपने नाटकों में अनेक सार्थक प्रयोग किये हैं और हिंदी नाट्य-साहित्य को एक नई दिशा देने का प्रयास किया है।

प्रबन्ध का विषय – **प्रयोगशील नाटककार : सुरेंद्र वर्मा** है। अभीतक लघु-शोध-प्रबन्ध की दिशा में सुरेंद्र वर्मा के नाटकों पर "प्रयोग" के रूपमें शोधकार्य नहीं हुआ है। केवल रंगमंच की दृष्टि से उनके कुछ नाटकों का अध्ययन किया गया है (सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में रंगमंचीयता – देवेंद्रकुमार गुप्ता, 1986) सुरेंद्र वर्मा सजग प्रयोगशील नाटककार हैं और उनकी प्रयोगधर्मिता उनके नाटकों में विविध आयामों में अभिव्यक्त हुई है। अतः उनके सभी प्रकाशित नाटकों को शोध-विषय के अन्तर्गत परखा गया है।

शोध प्रबंध छः अध्यायों में विभाजित है –

अध्याय 1 – विषय प्रवेश संबंधी है जिसके अन्तर्गत प्रयोग : अर्थबोध अर्थविस्तार, परंपरा एवं प्रयोग, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में प्रयोग, सुरेंद्र वर्मा के नाटकों की अवधारणा, आदि बातों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत अध्याय में शोध प्रबंध के विषय की जानकारी पृष्ठभूमि के रूप में देने का प्रयास है।

अध्याय 2 – सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में विषयगत प्रयोग इस अध्याय में सामाजिक परिप्रेक्ष्य : बदलते आयाम, राजनीतिक परिप्रेक्ष्य : युगीन संदर्भ, स्त्री-पुरूष संबंध : परिवर्तित व्याख्या, नये मूल्यों की तलाश, मिथकीय प्रयोग – इन विषयों पर प्रयोग की दृष्टि से प्रकाश डाला गया है।

अध्याय 3 – सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में मनोविज्ञानपरक प्रयोग" में प्रेम और यौनजन्य मनोविज्ञान, स्वप्न मनोविज्ञान, प्रभावजन्य मनोविज्ञान, असंगत जीवन से उद्भुत मनोविज्ञान तथा खण्डित व्यक्तित्व पर अधिक विचार किया है। सुरेंद्र वर्मा की प्रयोगधर्मिता आज के टूटे हुए मानव जीवन संदर्भ को अभिव्यक्त करने की है। अतः खण्डित व्यक्तित्व के अन्तर्गत आलोच्य नाटकों के प्रमुख पात्रों पर प्रकाश डाला है।

अध्याय ४ – "सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में शिल्पगत प्रयोग" के अन्तर्गत आलोच्य नाटकों का "प्रयोग" के परिप्रेक्ष्य में वस्तुविन्यास, पात्रपरिकल्पना, संवाद, भाषा, गीत संरचना, प्रतीक-बिंब, शीर्षक आदि पर सविस्तर अध्ययन किया है।

अध्याय 5 – "सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में रंगमंचीय प्रयोग" में निम्नलिखित विषयों पर प्रकाश डाला है। दृश्यबंध, अभिनय, प्रकाश योजना, ध्वनि एवं संगीत, रंगमंचीय प्रस्तुति और दर्शकीय संवेदना। दर्शकीय संवेदना के अन्तर्गत पाठकीय संवेदना पर भी सोचा है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध का अध्ययन श्रद्धेय गुरूवर डॉ. गजानन शंकर मुर्दे, हिन्दी विभागाध्यक्ष, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के निर्देशन में किया गया है। अपने कार्य में व्यस्त होने के बावजूद उन्होंने हर समय बड़ी तत्परता और तन्मयता से मौलिक मार्गदर्शन किया है। साथ ही डॉ. मुर्देजी के विशाल समृध्द ग्रंथालय से भी मैं पूरी तरह से लाभान्वित हो चुकी हूँ। अतः मैं उनकी हृदय से ऋणी हूँ।

प्रस्तुत शोध-कार्य में मुझे आदरणीय डॉ.व्ही.के. मोरे, डॉ. वाय्.बी. धुमाळ, प्रा. टी.आर. पाटील जी की सहायता प्राप्त हुई। मैं उन सब की आभारी हूँ। मेरे देवतुल्य पति स्व. ओमप्रकाशजी की कृपा से ही यह शोध-कार्य संपन्न हो सका। इस शोध-कार्य में हमारे परिवार के सभी सदस्यों एवं सहेलियों की प्रेरणा और सहायता लगातार मिलती रही अतः मैं उनकी कृतज्ञ हूँ।

सातारा

दिनांक – 21 मई 1990

Rasarda

(पुष्पा ओमप्रकाश सारडा)

" प्रयोगशील नाटककार : सुरेंद्र वर्मा "

अध्याय 1 : विषय प्रवेश

अध्याय 2 : सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में विषयगत प्रयोग

अध्याय 3 : सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में मनोविज्ञानपरक प्रयोग

अध्याय 4 : सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में शिल्पगत प्रयोग

अध्याय 5 : सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में रंगमंचीय प्रयोग

अध्याय 6 : उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रयोगशील नाटककार : सुरेंद्र वर्मा

अनुक्रमणिका

अध्याय पृष्ठ

1 विषय प्रवेश 9 – 28

प्रयोग : अर्थबोध अर्थविस्तार, प्रयोग की प्रकृति, प्रयोग की आवश्यकता, परंपरा एवं प्रयोग, साहित्य में प्रयोग, समाजगत प्रयोग, संस्कृत नाटकों में प्रयोग, पाश्चात्य नाटकों में प्रयोग, हिंदी साहित्यमें प्रयोग, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में प्रयोग (कथावस्तुगत प्रयोग, पात्रपरिकल्पनात्मक प्रयोग, शिल्पगत प्रयोग, मिथकीय प्रयोग, भाषागत प्रयोग, मंचीय प्रयोग, असंगत नाट्य प्रयोग) सुरेंद्र वर्मा : सृजनात्मक साहित्य, सुरेंद्र वर्मा के नाटकों की अवधारणा, फिल्म और नाटक के बारे में सुरेंद्र वर्मा की अवधारणा

2. सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में विषयगत प्रयोग 29 – 60

सामाजिक परिप्रेक्ष्य : बदलते आयाम – गुप्तकालीन समाज, सामंतकालीन समाज (नियोग पद्धति), उत्तर मुगलकालीन समाज (स्त्रियों की स्थिति), आधुनिक समाज (आधुनिक नारी की स्वच्छंदता, युवा वर्ग की स्वैराचारिता, नशापान, गृहस्थि जीवन, आर्थिक कमाई के नये तरीके)

राजनीतिक परिप्रेक्ष्य : युगीन संदर्भ – राजनीतिक चेतना और विद्रोह, राजनीति का कलाकारों पर दबाव, कलाकार की विवशता, गद्दी की होड़ में राजा, ओहदों की होड में प्रजा, कुटिल राजनीति

स्त्री-पुरूष संबंध : परिवर्तित व्याख्या – विवाह के परिप्रेक्ष्य में, विवाहपूर्व प्रेमसंबंध, विवाहोत्तर प्रेमसंबंध, आंतरजातीय विवाह, अनमेल विवाह, विफल प्रेम की समस्या

नये मूल्यों की तलाश – पारीवारिक विघटन, साहित्य में श्लीलता अश्लीलता का प्रश्न, काम-सुख की नयी व्याख्या, भौतिक जीवन की अदम्य लालसा और नैतिक मूल्यों की ह्रासोन्मुखता

मिथकीय प्रयोग

3. सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में मनोविज्ञानपरक प्रयोग 61 – 83

प्रेम और यौनजन्य मनोविज्ञान

स्वप्न मनोविज्ञान

प्रभावजन्य मनोविज्ञान

असंगत जीवन से उद्भुत मनोविज्ञान

खण्डित व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम – प्रवरसेन, प्रभावती, कालिदास, कपिंजल, [illegible]वती,

ओक्काक, अब्दुल्ला खाँ, सुरेखा, मनमोहन। 84-130

4. सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में शिल्पगत प्रयोग

1. वस्तुविन्यासगत प्रयोग – सेतुबंध, आठवाँ सर्ग, नायक खलनायक विदूषक, सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, छोटे सैयद बड़े सैयद, द्रौपदी, एक दूनी एक।

2. पात्रपरिकल्पनात्मक प्रयोग – अ) इतिहासाश्रित पात्र, आ) इतिहासाभासित पात्र, इ) लघु मानव का अंकन, ई) आधुनिक युगबोध से संपृक्त पात्र, उ) चरित्रचित्रण प्रणाली के विभिन्न प्रयोग

3. संवाद शिल्पगत प्रयोग – क) एकालाप शिल्प, ख) मन:स्थिति प्रवण शिल्प, ग) सांकेतिक संवाद शिल्प, घ) सूचनात्मक खण्डित संवाद, च) लघु और लंबे संवाद, छ) असंगत जीवन असंबद्ध संवाद, ज) अदालती संवाद, झ) वैज्ञानिक साधन और संवाद शिल्प

(अ) भाषाशिल्पगत प्रयोग – अ) पात्रानुकूल भाषाशैली, आ) व्यंग्यात्मक भाषाशैली, इ)प्रश्नार्थक भाषाशैली, ई) चित्रात्मक भाषाशैली, उ) काव्यात्मक भाषाशैली, ऊ) बिंबात्मक भाषाशैली, ए) प्रतीकात्मक भाषाशैली, ऐ) मुहावरेदार भाषाशैली, ओ) पूर्वदीप्ति शैली, औ) विभिन्न शब्द प्रयोग।

(आ) गीत संरचनात्मक प्रयोग

4. प्रतीकात्मक बिंबात्मक प्रयोग

5. शीर्षकों के अभिनव प्रयोग

5. सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में रंगमंचीय प्रयोग 131 – 153

1. दृश्यबंधगत प्रयोग

2. अभिनय संबंधी प्रयोग

3. प्रकाश योजना के अभिनव प्रयोग

4. ध्वनि एवं संगीत के औचित्यपूर्ण प्रयोग

5. रंगमंचीय प्रस्तुति और दर्शकीय संवेदना।

6. उपसंहार 154 – 160

संदर्भ–ग्रंथ–सूची